मालवा-निमाड़
जुलाई 2024
मूल्य 10.00 रुपए

जाग्रत मालवा

पंजीयन क्रमांक : MPHIN/2021/82532
मासिक जागरण पत्रिका

॥ गुरुपूर्णिमा ॥

सनातन संस्कृति में गुरु शिष्य परंपरा का महत्वपूर्ण स्थान है। गुरु ही अपने शिष्य को ज्ञान देकर उन्नति एवं अंधकार से प्रकाश का मार्ग प्रशस्त करते हैं। गुरुपूर्णिमा के पावन पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं।

Azadi Ka Amrit Mahotsav

SHAKTI
PUMPING LIFE

सूर्य ही नई शक्ति

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

सौर ऊर्जा का उपयोग एवं अपार फ़ायदों को सभी जानते है, और इसलिये हर जगह एवं हर क्षेत्र में इसका अस्तित्व दिखने लगा है. अब सौर ऊर्जा का उपयोग उद्योगों के साथ साथ घरेलु बिजली के उपयोग में भी होने लगा है.

शक्ति पत्पस् ने शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम को विकसित किया है.

MRP 29500/-

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम

- 150 वॉट का एक सोलर पेनल
- लिथीयम एंड फास्फेट (LFP) बैटरी 60 Ah
- MPPT चार्ज कंट्रोलर 20 A
- डीसी सिलिंग फैन
- 02 व्हाईट एलईडी बल्ब 6 वॉट

विशेषताएं

शक्ति सोलर होम लाईट एंड चार्जिंग सिस्टम में एक बार का निवेश जो आपको साल–दर–साल फायदा पहुंचाए.

- बिजली के बिल में कमी
- लम्बे समय तक चले
- भरोसेमंद एवं बाधा रहित परफॉर्मेंस
- रख–रखाव एवं चलाना आसान
- पर्यावरण–अनुकूल
- प्रचुर मात्रा में उपलब्धता
- परंपरागत ऊर्जा के स्रोतों पर निर्भरता से मुक्त
- सरल संचालन
- लिथियम बैटरी की लाईफ अन्य सामान्य बैटरी की तुलना में अधिक है एवं यह बहुत जल्दी चार्ज होती है.

सोलर कंट्रोलर की विशेषताएं

HIGH PERFORMANCE CHIP | MULTIPLE PROTECTION | AUTOMATIC RECOGNITION | LIGHT EFFICIENCY TIME CONTROL | PWN CHARGE | SIMPLE INSTALLATION

कार्यप्रणाली

India : Toll Free No. 1800 103 5555

शक्ति पम्पस् (इंडिया) लिमिटेड

सेक्टर – 3, औद्योगिक क्षेत्र, पीथमपुर, जिला–धार (म.प्र.) – इंडिया फोन.: +91-7292-410500
ई–मेल: info@shaktipumps.com, वेब: www.shaktipumps.com. टोल फ्री नं.: **1800 103 5555**

* नियम व शर्तें लागू

जाग्रत मालवा
इन्दौर दिनांक 5 जुलाई 2024 मासिक जागरण पत्रिका

मासिक जागरण पत्रिका
शीर्षक (टाईटल) पंजीयन MPHIN/2021/82532
वर्ष : 04 अंक : 02
•••
आषाढ़ / श्रावण मास
युगाब्द ५१२६

प्रधान संपादक
देवकृष्ण व्यास
संपादक
अरुण सपकाले
संपादक मंडल
डॉ. सुब्रतो गुहा
डॉ. सोनाली नरगुन्दे
डॉ. रत्नदीप निगम
डॉ. उत्तम मीणा
अशोक वर्मा
राकेश दांगी
राजेश सोनी
•••

मुख्य कार्यालय
जाग्रत मालवा
जी-1, केसरदीप एवेन्यू
72, नारायण बाग, इन्दौर (म.प्र.)
पिन कोड : 452007
फोन : 0731-3551341
•••
Email :
jagratmalwa@gmail.com
jagratmalwa

स्वामी – विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11/डी पोलोग्राउंड इंदौर म.प्र. से मुद्रित एवं अर्चना भवन, 76 रामबाग, इन्दौर म.प्र. से प्रकाशित।
संपादक अरुण सपकाले
फोन नं. 0731-3551341

अपनी बात

ॐ

भारतीय संस्कृति में गुरू का महत्व प्रत्येक युग में रहा है। गुरू के प्रति समर्पण का भाव भारतवर्ष की पुनीत परंपरा है। गुरू के बिना ज्ञान प्राप्त करना असंभव है। गुरू-शिष्य संबंध हमारी संस्कृति की अमिट पहचान है। गुरू हमारे बाह्य और आंतरिक गुणों का विकास करके हमें सत्य-मार्ग पर चलने की सतत प्रेरणा देते हैं। गुरू हमें संपूर्ण जीवन जीने की कला सिखाता है। गुरू के द्वारा दिये गये संस्कार के द्वारा ही हम जीवन को सफल एवं कृतार्थ बना सकते हैं। गुरू हमें अज्ञान के अंधेरे से ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाते हैं। गुरू हमें सिर्फ ज्ञान ही नही देता वह हमें मोक्ष के द्वार तक पहुँचाता है। गुरू के प्रति जितना समर्पण का भाव होगा जीवन उतना ही सार्थक होगा।

गुरू कोई व्यक्ति हो यह आवश्यक नहीं, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में परम पवित्र भगवा ध्वज को गुरू के रूप में पूजते हैं। सिख पंथ में गुरू ग्रन्थसाहब को मानते हैं। मनुष्य के प्रथम गुरू तो माता-पिता होते हैं आगे चलकर गुरू शिक्षक होता है जो उसे अक्षर ज्ञान कराता है। आगे आध्यात्मिक गुरू होते हैं जो उसे मोक्ष मार्ग पर चलने का ज्ञान देते हैं।

गुरू ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर के स्वरूप हैं। गुरू परमब्रह्म परमात्मा है। हिन्दू समाज में गुरू को ईश्वर से भी उपर सर्वोच्च स्थान दिया गया है। जैसी भावना और महत्ता गुरू को अपने भारतवर्ष में दी गई है वैसी संसार में कहीं भी नहीं।

संघ में व्यक्ति को गुरू इसलिए नहीं माना गया कि व्यक्ति स्खलनशील है पूर्ण नहीं है, अमर नहीं है, सदैव सब स्थानों पर उपस्थित नहीं रह सकता। गुरू ध्येय के अनुरूप होना चाहिए। अतः व्यक्ति के स्थान पर तत्व के प्रतीक भगवा ध्वज को ही गुरू का स्थान दिया गया है। भगवा सूर्य का प्रतीक है अर्थात् समय पर नित्य कार्य करने की प्रेरणा देता है। सूर्य की किरणें सब ओर जाती हैं, कोई भेद भाव नहीं। दसों दिशाओं में जाकर हमें सर्वस्पर्शी एवं सर्वव्यापी कार्य खड़ा करने की प्रेरणा देती हैं।

गुरू पूर्णिमा उत्सव

डॉ. सुब्रतो गुहा

गुरू पूर्णिमा उत्सव आषाढ़ पूर्णिमा के अवसर पर मनाया जाता है - जिसे व्यास पूर्णिमा के नाम से भी जाना जाता है। यह पर्व गुरू शिष्य की सतातन परंपरा का प्रतीक है। सदुरू अपने शिष्य को अज्ञानता के अधिकार से ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाता है और परमात्मा से साक्षात्कार करवाता है। तभी तो कहा गया है -

पादशाही की स्थापना करने के बाद छत्रपति शिवाजी ने अपने गुरू समर्थ गुरू रामदास से भेंट कर कहा था - **''गुरूदेव आज मैं जो कुछ भी हूँ वह सब आपकी कृपा एवं मार्गदर्शन के कारण ही संभव हुआ है, इसलिए मैं अपना समूचा राजपाट, गुरू दक्षिणा के रूप में आपके चरणों में सौंपता हूँ।''** कहते हैं कि जिसे सदुरू मिल गया समझो उसे सब कुछ मिल गया, परमात्मा ही मिल गया -

''गुरू गोविन्द दोऊ खड़े काके लागूँ पाए।

''गुरू ब्रह्म, गुरू विष्णु, गुरू देवो महेश्वर।
गुरू साक्षात परब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः।।''

पुण्यभूमि भारत की पावन भूमि अनेकानेक कालजयी सदुरुओं के अमिट पदचिन्हों की साक्षी रही है - चाणक्य-चन्द्रगुप्त, समर्थ गुरू रामदास-छत्रपति शिवाजी, रामकृष्ण परमहंस-स्वामी विवेकानन्द इत्यादि। सद्गुरू की पारखी नजर सद्शिष्य की पहचान सहजता से करने में सक्षम होती है। तभी तो अपने हजारों शिष्यों में से सर्वाधिक योग्य शिष्य चन्द्रगुप्त का चयन कर, चाणक्य ने उसे वीर योद्धा और अंततः मौर्य साम्राज्य का संस्थापक बनाया। सद्शिष्य के जीवन में सदुरू का महत्व समझाते हुए चाणक्य ने चन्द्रगुप्त से कहा था - **''मत भूलो चन्द्रगुप्त, जो चाणक्य एक चन्द्रगुप्त जैसे सद्शिष्य का निर्माण कर सकता है, वह सौ अन्य चन्द्रगुप्तों का निर्माण कर सकता है, परन्तु सौ चन्द्रगुप्त जैसे सद्शिष्य मिलकर भी एक चाणक्य जैसे सद्गुरू का निर्माण नहीं कर सकते। यही सद्गुरू की महिमा है।''**

सन् 1674 में चक्रवर्ती सम्राट घोषित होकर हिन्दू पद

बलिहारी गुरू आपनो, गोविन्द दियो बताए।।''

सदुरू हमारे मार्गदर्शक होते हैं, जो हमें सफल और सार्थक जीवन की ओर ले जाते हैं, इसलिए हम गुरू के प्रति सदैव ऋणी रहते हैं। सन् 1886 में गुरू रामकृष्ण परमहंस के देहावसान के बाद उनके शिष्य स्वामी विवेकानन्द ने अपने गुरू के आध्यात्मिक कार्यों को आगे ले जाने हेतु आश्रमों की स्थापना की और नाम दिया रामकृष्ण मिशन एवं रामकृष्ण आश्रम।

सदुरू केवल अपने जीवनकाल में ही नहीं बल्कि युग युगान्तर तक आने वाली पीढ़ियों के लिए भी सार्थक जीवन के पथ प्रदर्शक बने रहते हैं और प्रेरणा स्त्रोत का दायित्व निभाते हैं-

''सदगुरूओं की जीवनगाथा सीख हमें यह देती है,
हम भी अपने जीवन को चरमोत्कर्ष तक पहुँचाएँ।
और विदाई बेला में अपने पीछे,
समय की रेत पर पदचिन्ह छोड़ जाएँ।।''

खण्डवा - अध्यात्मिक गुरू श्री दादाजी धूनीवाले का एक पवित्र स्थान

दुर्गेश कुमार साध

मध्यप्रदेश के खण्डवा जिले को प्रसिद्ध संत श्री दादाजी धूनीवाले के नाम से भी जाना जाता है। अनेक जगहों पर भ्रमण करने वाले संतों में श्री दादाजी धूनीवाले ने अपनी समाधि के लिए इसी स्थान का चयन किया था, तबसे दादाजी-भक्तों के लिए यह एक तीर्थ-नगरी का रूप ले चुकी है। खण्डवा के लोग आपको राम-राम के साथ-साथ **'जय श्री दादाजी'** कहते हुए अवश्य दिख जाएँगें। वैसे तो देश भर में दादाजी के कुल 27 मंदिर हैं, मगर चूँकि खण्डवा में उन्होंने समाधि ग्रहण की थी, इसलिए इन गुरु-स्थानों में खण्डवा का **'दादाजी दरबार'** मंदिर अग्रणी है। **'गुरु-पूर्णिमा'** के दिन खण्डवा में देश-भर से दादाजी भक्त, दर्शन के लिए एकत्रित होते हैं। इस अवसर पर यहाँ की धर्मप्रेमी जनता बाहर से आए आगंतुकों के लिए विभिन्न व्यवस्थाएँ जुटाती है, फिर चाहे वह रहने की सुविधा हो या जलपान की अथवा विश्राम करने की। सबसे बड़ी बात यह है कि अधिकांश सुविधाओं निःशुल्क एवं स्वैच्छिक ही होती हैं। देशभर में फैले दादाजी के भक्तों की यह हार्दिक इच्छा होती है कि गुरु-पूर्णिमा पर **'दादाजी दरबार'** में उनकी **'हाजिरी'** लग जाए, इसलिए पिछले कुछ समय में भक्तों की संेया अब लगभग 5 से 6 लाख तक पहुँच चुकी है।

श्री दादाजी ने जिन-जिन स्थानों पर प्रवास किया, वहाँ -वहाँ उन्होंने अखण्ड धूनी अवश्य जलाई, इसलिए वे **'धूनी वाले'** के नाम से प्रख्यात हुए। खण्डवा की धूनी भी लगातार अखण्ड रूप से 94 वर्षों से निरंतर जलती आ रही है। दादाजी का मंदिर लगभग 14 एकड़ में फैला हुआ है। यहाँ पर ही बड़े दादाजी के शिष्य छोटे दादाजी की भी समाधि है। श्री दादाजी का प्रथम प्राकट्य नरसिंहपुर के एक गॉंव शिवखेड़ा में हुआ था। उनके जन्म के बारे में इसलिए कुछ कहा नहीं जा सकता, क्योंकि सिद्ध पुरुष जन्म नहीं लिया करते, वरन् वे धरती पर केवल आवागमन किया करते हैं। जनश्रुतियों के अनुसार वे शिवखेड़ा में स्थित एक पेड़ से प्रकट हुए थे। श्री दादाजी महाराज के **'भगवान शिव के अवतारी'** होने की बात नर्मदा माई ने उनके गुरु श्री गौरीशंकर जी महाराज को साक्षात् दर्शन देकर बताई थी। अपनी टोली या जमात के लिए प्रसाद बनाने के लिए जब कभी घी की रसद कम पड़ती थी, तो वे अनायास ही नर्मदा मैया से मॉंग लिया करते थे। आश्चर्य की बात तो यह है कि नर्मदा मैया का पानी कब घी में परिवर्तित हो जाता था, यह किसी को पता तक नहीं चलता था!

श्री दादाजी की प्रसिद्धि उन दिनों इतनी अधिक थी कि स्वयं पं. जवाहरलाल नेहरू, मदन मोहन मालवीय जी एवं महात्मा गॉंधी के साथ दादाजी के दर्शन के लिए आए थे। तब दादाजी ने नेहरू जी को डंडे के रूप में आशीर्वाद देकर भविष्यवाणी की थी

कि **''ये मोड़ा के स्वराज दी है''** अर्थात् **''इसी लड़के को स्वराज दिया जाएगा'',** यानी यही हमारे प्रधानमंत्री होंगे। एक बार काशी के कुछ विद्वान दादाजी की परीक्षा लेने शिवखेड़ा पहुँचे, तो अंतर्यामी श्री दादाजी ने वेद की ऋचाओं का उच्च स्वर में ऐसा अद्भुत पाठ किया कि वे सब लज्जित होकर दादाजी महाराज के चरणों में गिर पड़े। हालॉंकि दादाजी ने कभी भी किसी को प्रभावित करने के लिए वेद, शास्त्र अथवा मंत्रों का सहारा नहीं लिया, बल्कि अपनी सामान्य-सी दिखने वाली लीलाओं से समाज के कष्टों को दूर किया, इसलिए वे सच्चे अर्थों में एक सिद्ध संत थे। उनके मुँह से जो भी निकलता था, वह सत्य हो जाता था। वे जिस किसी को अपने डंडे से मार देते, तो उसका रोग दूर हो जाता, उसका कल्याण हो जाता, इसलिए उनके द्वार के बाहर लोगों की भीड़ लग जाया करती थी कि हमें भी एकाध डंडा खाने का सौभाग्य प्राप्त हो जाए। ऐसे सिद्ध संत पृथ्वी पर यदाकदा ही अवतरित होते हैं। जय श्री दादाजी।

हमारी भूमिका

एक लंबी गहमा-गहमी भरी प्रक्रिया के बाद अंततः देश में चुनाव संपन्न हुए। सारे राजनीतिक दलों ने अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार विजय के लिए प्रयत्न किया और परिणाम आने पर लोकतांत्रिक पद्धति से एक सरकार का गठन हुआ। चुनाव के पहले तक सारे राजनीतिक दल अपनी-अपनी विचारधारा का प्रतिनिधित्व कर रहे थे, किंतु नवगठित सरकार किसी भी राजनीतिक दल की हो, वह देश के प्रत्येक नागरिक का प्रतिनिधित्व करती है।

प्रत्येक नागरिक को अपनी नई सरकार से अपेक्षाएँ होती हैं, जो स्वाभाविक भी है। समाज और प्रत्येक नागरिक की व्यक्तिगत उन्नति के लिए जो भी हो सकता है, सरकारें अपने स्तर पर बहुत कुछ करती हैं। किंतु एक सच यह भी है कि भारत जैसे विशाल देश में समाज की सर्वांगीण उन्नति के लिए सरकारों पर ही निर्भर नहीं रहा जा सकता। भारत के अपने सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्य आपसी सहजीवन से निर्मित हुए हैं। भारत का मूल चरित्र, शासन की बनाई हुई रूपरेखाओं पर आश्रित नहीं है। सहस्त्रों वर्ष से भारत को उसके समाज जीवन ने ही गढ़ा है, जिसमें शासन की भूमिका समाज के ही एक अंग के रूप में है, सर्वांग के रूप में नहीं। भारत ने अभी भी अपना मूल चरित्र नहीं खोया है और इसीलिए आज भी भारतीय समाज पर अपने राष्ट्र के निर्माण की उतनी ही जिम्मेदारी है जितनी प्राचीन काल मे थी। भारत का लोकजीवन कभी भी सरकारों पर उतना आश्रित नहीं रहा कि उसके परिवर्तन से जीवन मूल्यों में परिवर्तन हो जाए।

इसका सीधा सा अर्थ यह है कि हमारी सजगता और कर्तव्यबोध से ही भविष्य के भारत का निर्माण होगा। हम सरकारों के भरोसे नहीं बैठ सकते। अपने नगर, अपने ग्राम, अपने समाज की चिंता हमें स्वयं करनी होगी। स्वतःज्ञान से हमें उन कार्यों की ओर बढ़ना होगा, जिससे कि हम आने वाली पीढ़ियों को एक उज्ज्वल भविष्य दे सकें और यह कार्य हमारे अपने गांव से प्रारंभ हो सकता है।

उदाहरण के लिए वैश्विक रूप से बिगड़ते हुए पर्यावरण की चिंता जगजाहिर है। ऐसे में हम अपने गांव में वृक्षारोपण जैसे कार्य करके, प्रकृति की बड़ी सेवा कर सकते हैं। अपनी हवा, अपनी मिट्टी और अपने पानी को स्वस्थ और स्वच्छ रखना भी हमारी ही जिम्मेदारी है। ऐसे में जितना हो सके रासायनिक खाद का उपयोग कम करके, जैविक खेती की तरफ बढ़ना, मानवता की भी बड़ी सेवा होगी। अपने पारिवारिक जीवन में भी स्वदेशी जीवन पद्धति, स्वदेशी उत्पादों का उपयोग और स्वदेशी विचार को बढ़ावा देकर हम अपने राष्ट्र की उन्नति में बड़े सहयोगी हो सकते हैं।

गाय को हमने माँ कहा है और माँ बूढ़ी होने पर भी माँ ही रहती है। गाय कितनी भी बूढी हो, यदि हम उसे बेचेंगे नहीं, निराश्रित छोड़ेंगे नहीं, तो कसाई उसे कैसे काट सकेंगे। देश में

बढ़ती गौहत्या रोकने का उपाय हमारे अपने संकल्पों से निकल सकता है।

समाज मे बढ़ती नशाखोरी भी सरकारों के सामने एक बड़ी चुनौती है, किंतु केवल सरकारी उपाय ही लोगों को नशा करने से रोक नहीं सकेंगे। ऐसे में अपने गांव में नशाबंदी हो सके, उसके प्रयत्न सामूहिक रूप से हमें ही करने होंगे।

आधुनिकता ने अपने पैर तेजी से पसारे हैं। ऐसे में हमारे कई रीति-रिवाज, परंपरा, कहीं पीछे छूटते नजर आते हैं। हम अपने परंपरागत त्यौहारों को उतनी ही शुद्धता से मनाते रहें, इसकी जिम्मेदारी भी हमारी ही है। हमारे बच्चे हमारे रीति-रिवाज को समझें, हमारी परंपराओं को जानें, हमें इसका भी विशेष प्रयास करना चाहिए।

वर्तमान मे ऐसी वृत्तियाँ भी मौजूद हैं, जो जातियों के नाम पर समाज का विखंडन करके हमें कमजोर कर देना चाहती हैं। हमारे समाज की सभी जातियां समरस भाव से, एक-दूसरे के साथ जुड़ी रहें, हम सभी के बीच में स्नेहिल बंधन बना रहे, हम

सभी को इस हेतु प्रयास करना चाहिए, क्योंकि इसी एकता में भारत के स्वर्णिम भविष्य के सूत्र छुपे हैं। यदि हमारे अपने गांव में, हमारे अपने ही भाई घोड़ी पर नहीं चढ़ सकते हों, यदि हमारे अपने गांव में, सभी बंधुओं के लिए एक मंदिर, एक श्मशान और एक जल का स्रोत नहीं है, तो यह हमारा दुर्भाग्य है। समरसता के इस कार्य को न केवल एक उत्तरदायित्व समझकर, बल्कि ईश्वरीय कार्य जान कर प्रयास करने होंगे।

एक समय था, जब भारत के हर गांव में हरिनाम संकीर्तन के साथ सवेरा होता था। गांव के सभी लोग प्रभात फेरियों के माध्यम से, पूरे गांव में धर्म और समरसता का अमृत घोल दिया करते थे। यदि हम दृढ़ इच्छाशक्ति से यह संकल्प ले लें तो वही दृश्य भारत के गांव-गांव में पुनर्जीवित किया

जा सकता है। सपरिवार मंदिर जाना, दिन में एक बार मंदिर की आरती में उपस्थित होना, समय-समय पर सुंदरकांड, रामचरितमानस पाठ इत्यादि जैसे आयोजनों का भागीदार बनना, इस प्रकार के कार्यों से हम अपने समाज और व्यक्तिगत जीवन दोनों को सुंदर और कल्याणकारी बना सकेंगे।

ऐसे और भी अन्य कई छोटे-छोटे उपायों को अपने जीवन में चरितार्थ करके हम अपने घर को एक आदर्श हिंदू घर और अपने समाज को आदर्श हिंदू समाज बना सकेंगे। हमारे इन्हीं प्रयत्नों में भारत के अभ्युत्थान के सूत्र अवस्थित हैं। जब शासन द्वारा किए गए कार्यों के साथ, हमारे यह प्रयास भी जुड़ जाएंगे तभी भारत, विश्व में पुनः अपना प्राचीन गौरव प्राप्त कर सकेगा।

।।रघुनंदन का अभिनंदन है।।

देवकृष्ण व्यास

राम आस्था अस्मिता और विश्वास है
राम मर्यादा और मानवता का आभास हे
राम अलि भारतवर्ष की पहचान है
राम विश्व विजय का अमर गान है

राम बाल्मीकि का चिन्तन है
राम अविनाशी चिरंतन है
राम की महिमा युगों ने गाई है
राम तुलसी की अमर चौपाई है

राम शबरी की प्रतीक्षा है
राम अहिल्या की परीक्षा है
राम रघुकुल का कठोर प्रण है
राम हनुमान का समर्पण है

राम पतितों के रक्षक है
राम जन्म से मरण तक है
राम अवध मथुरा और काशी है
राम घट घट के वासी है

राम करूणा के सागर है
राम अमृत की गागर है
राम दीनों के दयाल है
राम भारत के भव्य भाल है

राम आत्मा नहीं परमात्मा है
राम निश्छल देवात्मा है
राम मर्यादा पुरूषोत्तम है
राम नारायण नरोत्तम है

आदर्श शासक महान नारी : लोकमाता देवी श्री अहिल्या बाई होलकर

अमित राव पवार

विश्व हो या भारत इतिहास के पन्नों पर राजा से ही रानी की पहचान को देखा गया है, लेकिन कुछेक रानियों ने अपनी एक अलग पहचान बनाकर अपने दो (पिता व पति का घर) वंश-परिवारों को विश्व विख्यात किया है। उन्हीं में से एक प्रमुख नाम लोकमाता अहिल्याबाई होलकर का है, जिन्होंने समाज की बेड़ियों को तोड़ स्वयं की एक अलग पहचान बनाई। मालवा के इंदौर में होलकर परिवार की पुत्रवधू अहिल्याबाई प्रसिद्ध मराठा शासकों में से एक शासक के रूप में रहीं। वे बहादुर, दूरदर्शी, जनहितैषी, बुद्धिमान आध्यात्मिक और विदुषी थीं। अपने ससुर श्रीमंत महाराज मल्हार राव होलकर तथा पति खांडेराव की मृत्यु के पश्चात 11 दिसंबर 1767 से इंदौर का शासन संभाला। ब्रिटिश इतिहासकार जॉन किए ने इन्हें **द फिलॉसफर क्वीन** के शब्द से सम्बोधित किया। वे मालवा की शासक उग्र रानी और कुशल प्रशासक होने के साथ एक समझदार राजनीतिज्ञ भी थीं। जब मराठा पेशवा अंग्रेजों और उनकी योजनाओं को समझ न सके तब इन्होंने पेशवा को आगाह किया था। संसार में जो भी प्रसिद्ध स्थान है उनकी ख्याति अथवा प्रसिद्धि के कुछ न कुछ महत्वपूर्ण कारण होते हैं। जहां प्राचीन इतिहास हमें गर्व का अनुभव कराता है। वहीं प्राचीन स्थान और जगह हमें सैकड़ों वर्षों के बाद भी वहां की संस्कृति, सभ्यता, इतिहास, पहचान आदि का परिचय करवा रहे हैं, जैसे श्रीराम की अयोध्या, कृष्ण की मथुरा। दुख है कि इन नगरों में बोलने की शक्ति नहीं है। यदि होती तो यह अपने दुख,कष्ट और परिवर्तनों का इतिहास हमें बताते। इन्हीं में से एक लोकमाता अहिल्याबाई होलकर का इंदौर शहर है, जो मध्यप्रदेश राज्य के कार्य का मानो केंद्रबिंदु है। अहिल्याबाई का जन्म 31 मई 1725 ईस्वी में अहमदनगर जिले के तालुका जामखेड़ा के चौड़ी नामक गांव में रहने वाले मांकोजी शिंदे के यहां जगप्रसिद्ध कन्या रत्न के रूप में हुआ। यह समय वह था जब पढ़ाई-लिखाई का सामान्य परिवारों में चलन न के बराबर था। पर आपके पिता ने आपको थोड़ा अध्यापन करवाया। आप बचपन से ही ईश्वर-पूजन-पाठ तथा पुराण का वाचन न हो जाए तब तक भोजन ग्रहण नहीं करती थीं। आपकी मृत्यु 13 अगस्त 1795 को हुई। आपका कुल शासन 30 वर्षों का रहा, जो आपने अपने सामर्थ्य के बल पर किया। (1 दिसंबर 1767 से 13 अगस्त 1795 तक) अपनी सूझबूझ तथा हिमत के बल पर आपने अपने राज्य को ताकतवर बनाया और दुनिया को उस समय दिखाया कि महिलाएं भी पुरुषों से कम नहीं हैं और बराबरी से कदमताल कर सकती हैं। जबकि वह दौर पति की मृत्यु के बाद सती होने का था, पर अहिल्याबाई ने अपनी 16 करोड़ की विरासत पर पास के राज्य और किसी विरोधियों का कब्जा नहीं होने दिया। यह बात आपके व्यक्तित्व पर और अधिक प्रकाश डालती है। आपकी दृष्टि अत्यंत व्यापक थी। पर्यावरण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया, इसके साथ ही समाज के विभिन्न वर्गों के उत्थान के लिए नई परंपराओं का सूत्रपात किया। लोगों के पास जाकर उनके दु:ख-दर्द, परेशानियों को स्वयं अनुभव कर सुना, तथा जरूरत के आधार पर पर्याप्त सहायता के आदेश दिए। आपने न सिर्फ अपने राज्य में बल्कि संपूर्ण भारतवर्ष में लगभग 65 मंदिर, धर्मशालाओं का निर्माण करवाया। साथ ही साथ सेकें, तालाब, घाट, कुँए, बावड़ियों, पानी की टँकी को सुविधाओं के साथ बनवाया।

9 वर्ष के अपने पुत्र मालोजी की मृत्यु के बाद आपने इंदौर से महेश्वर को अपनी राजधानी बनाया और वहीं से राज्य का कार्य करते हुए दूरस्थ अमरकंटक, केदारनाथ, बद्रीनाथ, रामेश्वरम, अयोध्या, पुष्कर, मथुरा, काशी, हरिद्वार आदि स्थानों पर धर्मशालाएं बनवाई। उज्जैन में 9 मंदिर और 13 घाट का निर्माण आपके नाम से है। देवालय और सांस्कृतिक धरोहरों के नवनिर्माण के साहसिक कार्य में आपका योगदान ऐतिहासिक है। आपकी सोच एक राज्य तक ही सीमित नहीं थी। आपका विचार संपूर्ण मानव कल्याण का था। कर्तव्यनिष्ठ, धार्मिक एवं समाजसेवी होने से आपका नाम लोकमाता अहिल्याबाई हुआ। आपने भारत के गौरव को बढ़ाया। संपूर्ण जीवन दु:ख, संघर्ष, संकट के बीच ईश्वर की इच्छा के अनुरूप अपना कार्य किया। आपका जीवन प्रेरणादायी है। आपने सामाजिक क्रांति की। आप न्याय, प्रशासन तथा वीरता की मिसाल हैं। आपने अपनी आत्मशक्ति के बल पर लोक कल्याण का कार्य किए। आपकी न्याय क्षमता राज्य व्यवस्था आधारित थी। युगों-युगों तक आदर्श शासक महान नारी-लोकमाता देवी श्री अहिल्या बाई होलकर को लोग स्मरण करते रहेंगे।

भारतीय परंपरा में गुरु का महत्व

खुशी पंवार

भारतीय परंपरा में गुरु का महत्व हमारे सभी संतों, ऋषियों और महान विभूतियों ने उच्च स्थान दिया है। संस्कृत में **गु** का अर्थ अंधकार (अज्ञान) और **रु** का अर्थ प्रकाश (ज्ञान) होता है। गुरु हमें अज्ञान रूपी अंधकार से ज्ञान रूपी प्रकाश की ओर ले जाते हैं। इसलिए भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान ईश्वर के समान माना गया है। संसारिक मनुष्य के जीवन का पथ जहां से शुरू होता है, वो राह दिखाने वाला गुरु होता है। बिना गुरु के ज्ञान का मिलना असंभव है। मनुष्य अज्ञान रुपी अंधकार मे भटकता हुआ मायारूपी सांसारिक बन्धनों में जकड़ा रहता है जब तक कि गुरु की कृपा नहीं प्राप्त होती। गुरु के बिना सत्य एवम् असत्य का ज्ञान नहीं होता, उचित और अनुचित के भेद का ज्ञान नहीं होता। भारतीय संस्कृति में गुरु का मार्गदर्शन मानव को सांसारिक भवसागर से पार कराता है। अतः यह भी कहा जाता है गुरु बिना दान, पुण्य, जप, तप, शिक्षा, संसार के सभी कर्म सुख निष्फल हैं। प्रत्येक वर्ष आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा का पर्व पूरे भारतवर्ष में मनाया जाता है। गुरुपूर्णिमा पर्व हिंदू धर्म के विभिन्न पंथों, संप्रदायों के साथ-साथ सिख, बौद्ध, जैन धर्मावलंबी भी अपने-अपने अनुयायियों से इस दिन अपने गुरु के सेमान में व्रत, पूजन आदि द्वारा यह पर्व मनाते हैं। बौद्ध धर्म में इसी दिन भगवान गौतम बुद्ध ने पहली बार उपदेश देते हुए गुरु-शिष्य परंपरा की शुरुआत की थी, इसलिए इस स्वर्णिम अवसर को जीवित रखने के लिए इसे महापर्व गुरुपूर्णिमा पर्व के रूप में मान्यता दी गई है।

गुरु पूर्णिमा क्यों मनायी जाती है? गुरूपूर्णिमा पर्व संभवतः सबसे प्राचीन पर्व है जो आदिकाल से आज पर्यन्त तक मनाया जा रहा है। संभवतः यह ऐसा प्रथम पर्व भी है जिसे पवित्र रूप से भारतीय परंपरा के अनुरूप ही मनाया जाता है शिष्य, श्रद्धा समर्पण से अपने गुरु का पूजन करते हैं। वेद सभी विद्याओं का मूल है अतः मूल रूप से वेद ही गुरू हैं जिनके आधार पर गुरू की महानता को प्राप्त करता है और महर्षि वेदव्यास इनके रचनाकार हैं इसी कारण वेदव्यास को गुरू-शिष्य परंपरा के जनक मानकर उनके जन्मदिन को ही गुरू पूर्णिमा के रूप में मनाया जाता है। गुरु वेदव्यास के शिष्यों ने भी सोचा कि महर्षि वेदव्यास का पूजन किस शुभ दिन पर किया जाय। बहुत विचार विमर्श के पश्चात समस्त शिष्य सहमत हुए कि क्यों न गुरु वेदव्यास के इस अवतरण दिवस पर ही पूज्य गुरुदेव का पूजन किया जाय। इस प्रकार, गुरु वेदव्यास के शिष्यों ने इसी पुण्यमयी दिवस को अपने गुरु के पूजन का दिन चुना। यही कारण है कि गुरु पूर्णिमा को **व्यास पूर्णिमा** भी कहा जाता है। तब से लेकर आज तक हर शिष्य अपने गुरुदेव का पूजन वंदन इसी शुभ दिवस पर करता है। वास्तव में यह पर्व समर्पण का पर्व है, जिसमें शिष्य अपने गुरू के सम्मुख अपना समर्पण करता है और सब अर्पण कर देता है। भारत में वैदिक काल के पूर्व से ही ज्ञान परम्परा एवं गुरु-शिष्य परम्परा का प्रचलन है इसके अंतर्गत गुरु (शिक्षक) अपने शिष्य को शिक्षा देते हैं या कोई विद्या सिखाते हैं। शिष्य ये संस्कार गुरुकुल में जा कर अर्जित करता है। बाद में वही शिष्य गुरु के रूप में दूसरों को शिक्षा देता है। यही क्रम चलता जाता है। यह परम्परा सनातन धर्म की सभी धाराओं में मिलती है। गुरु-शिष्य की यह परेपरा ज्ञान के किसी भी क्षेत्र में हो सकती है, जैसे- अध्यात्म, संगीत, कला, वेदाध्ययन, वास्तु आदि।

योग परंपरा के अनुसार आज ही के दिन भगवान शिव ने सप्तऋषियों को योग का ज्ञान दिया था और प्रथम गुरु बने थे। हमारे जीवन के प्रथम गुरु हमारे माता-पिता होते हैं। जो हमारा पालन-पोषण करते हैं, सांसारिक दुनिया में हमें प्रथम बार बोलना, चलना तथा शुरुआती आवश्यकताओं को सिखाते हैं। अतः माता-पिता का स्थान सर्वोपरि है। उसके पश्चात् धरती माता जिस पर हम पले-बढ़े। तृतीय गुरु हमारे शिक्षक जो हमें शिक्षा द्वारा सही मार्ग दिखाते हैं। गुरु अपने शिष्य को अध्यात्म के मार्ग पर ले जाकर साक्षात् ईश्वर की प्राप्ति भी करवाते हैं। स्वामी विवेकानंद जी को बचपन से परमात्मा को प्राप्त करने की इच्छा थी। उनकी ये इच्छा तभी पूरी हो सकी, जब उनको गुरू रामकृष्ण परमहंस का आशीर्वाद मिला। गुरू की कृपा से उन्हें आत्म साक्षात्कार हो सका। छत्रपति शिवाजी पर अपने गुरू समर्थ गुरू रामदास का मार्गदर्शन हमेशा रहा। आचार्य चाणक्य के गुरु-चाणक्य के गुरु उनके पिता चणक थे। महान सम्राट चंद्रगुप्त के गुरु आचार्य चाणक्य थे। भारत विश्वगुरु की पद पर है, जो स्वयं संपूर्ण जगत को गुरु का महत्व बताता है। कई महान गुरुओं ने भारत को अलौकिक शिष्य दिए।

भावी जीवन का निर्माण गुरू द्वारा ही होता है। वर्तमान परिवेश में गुरु पूर्णिमा पर्व बहुत महत्वपूर्ण है, हमें जिसके भी द्वारे किसी भी रूप में ज्ञान प्राप्त होता है या कोई भी ज्ञान का भान कराता है तो वह प्रत्यक्ष प्राणि-गुरु हो जाता है धार्मिक, आध्यात्मिक, दार्शनिक रूप से यह परम्परा आस्था के रूप में हमारे समक्ष प्रकट होती है किन्तु व्यावहारिक रूप से भी आज यह परंपरा प्रचालित है। नृत्य या गायन कला में गुरु-शिष्य परंपरा प्रसिद्ध है। यह परंपरा आज हर उस कला में व्याप्त है जिसे सिखाया जाता है। आजकल इस पर्व को हम सभी सिर्फ आश्रमों में ही नहीं मनाते हैं, अपितु व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों से अपने ट्रेनर, मेंटर, शिक्षक, प्रशिक्षक आदि को गुरू संज्ञा देकर आज के दिन उनका सम्मान करते हैं, उनके प्रति अपनी कृतज्ञता और समर्पण भाव व्यक्त करते हैं।

महारानी अहिल्याबाई होलकर

जिनके बिना अधूरा है देश के सैकड़ों मंदिरों का इतिहास एक ऐसी महिला शासक, जिन्हें भारत के धार्मिक स्थलों की महारानी कहा जाए, तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। उनका नाम है महारानी अहिल्याबाई होलकर। देवी अहिल्याबाई ने देशभर में कई प्रसिद्ध तीर्थस्थलों पर मंदिरों, घाटों, कुओं और बावड़ियों का निर्माण कराया। इतनी ही नहीं, उन्होंने सडकों का निर्माण करवाया, अन्नक्षेत्र खुलवाये, प्याऊ बनवाये और वैदिक शास्त्रों के चिन्तन-मनन व प्रवचन के लिए मन्दिरों में विद्वानों की नियुक्ति भी की। रानी अहिल्याबाई ने बड़ी संेया में धार्मिक स्थलों के निर्माण कराए। उनके समस्त कार्यों की पूरी जानकारी तो फिलहाल उपलब्ध नहीं हैं लेकिन उपलब्ध दस्तावेजों से मिली जानकारी इस प्रकार है -

सोमनाथ- सोमनाथ के मंदिर का पुनर्निर्माण करवाया, जिसे 1024 में गजनी के महमूद ने नष्ट कर दिया था। साथ ही सोमनाथ मंदिर के मुख्य मंदिर के आस-पास सिंहद्वार और दालानों का निर्माण करवाया।

त्र्यंबक- यहां पत्थर का एक सुन्दर तालाब और दो छोटे-छोटे मंदिरों का निर्माण करवाया।

गया - विष्णुपद मंदिर के पास दो मंजिला मंदिर का निर्माण करवाया, जिसमें भगवान राम, जानकी और लक्ष्मण और हनुमान जी की मूर्तियां प्रतिष्ठित हैं।

पुष्कर- एक मंदिर और धर्मशाला बनवाई।

वृन्दावन- एक अन्नक्षेत्र और एक लाल पत्थर की बावड़ी बनवाई।

नाथद्वारा (राजस्थान) - मंदिर, धर्मशाला, कुआं व कुंड बनवाया।

टेहरी (बुंदेलखंड) - धर्मशाला बनवाई।

बुरहानपुर (म.प्र) - घाट बनवाया।

बेरुल (कर्नाटक) - गणपति, पांडुरंग, जालेश्वर, खंडोबा, तीर्थराज व अग्नि के मंदिर बनवाए।

आलमपुर- सोनभद्र नदी के तट पर बसे इस स्थान पर अपने ससुर की स्मृति में एक देवालय स्थापित करवाया। भगवान विष्णु का एक मंदिर भी यहां बना हुआ है।

हरिद्वार -अहिल्याबाई ने हरिद्वार स्थित कुशावर्त घाट का जीर्णोद्धार करवाकर उसे पक्के घाट में परिवर्तित करवाया। उन्होंने इसी स्थान के समीप दत्तात्रेय भगवान का मंदिर भी स्थापित करवाया। पिंडदान के लिए भी एक उचित स्थान का निर्माण करवाया।

वाराणसी- सुप्रसिद्ध मणिकर्णिका घाट का निर्माण करवाया। राजघाट और अस्सी संगम के मध्य विश्वनाथ जी का सुनहरा मंदिर है। यह मंदिर 51 फुट ऊंचा और पत्थर का बना हुआ है। मंदिर के पश्चिम में गुंबजदार जगमोहन और इसके पश्चिम में दंडपाणीश्वर का पूर्वमुखी शिखरदार मंदिर है। इन मंदिरों का निर्माण अहिल्याबाई ने ही करवाया था। वाराणसी में ही अहिल्याबाई होलकर ने अहिल्याबाई घाट तथा उसके समीप एक बड़ा महल बनवाया। महान संत रामानन्द के घाट के समीप उन्होंने दीपहजारा स्तंभ बनवाया। उन्होंने बहुत से कच्चे घाटों का जीर्णोद्धार कराया, जिसमें से शीतलाघाट प्रमुख है। इस प्राचीन नगर में महारानी ने हनुमान जी के भी एक मंदिर का निर्माण करवाया। काशी के समीप ही तुलसीघाट के नजदीक लोलार्ककुंड के चारों ओर कीमती पत्थरों से जीर्णोद्धार करवाया। इस कुंड का उल्लेख महाभारत और स्कन्दपुराण में भी मिलता है।

बद्रीनाथ और केदारनाथ- धर्मशालाओं का निर्माण करवाया। सन

1818 में कैप्टन स्टुअर्ट नाम का एक व्यक्ति हिमालय की यात्रा पर गया। वहां केदारनाथ के मार्ग पर तीन हजार फुट की ऊंचाई पर अहिल्याबाई द्वारा निर्मित एक पक्की धर्मशाला उसने देखी थी। बद्रीनाथ में तीर्थयात्रियों और साधुओं के लिए सदावर्त यानी हमेशा अन्न बांटने का व्रत लिया था। हिंदू धर्म में गंगाजी का व गंगाजल का बड़ा महत्व है। पूरे देश में स्थापित तीर्थस्थान भारत की एकात्मकता व राष्ट्रीयता के परिचायक हैं। भारत के तीर्थों में गंगाजल पहुंचाने की श्रेष्ठ व्यवस्था द्वारा अहिल्याबाई ने धार्मिकता के साथ-साथ राष्ट्रीय एकात्मकता की प्राचीन परंपरा को नवजीवन दिया था।

देवप्रयाग - इस स्थान पर अहिल्याबाई ने तीर्थयात्रियों और साधुओं के लिए सदावर्त यानी हमेशा अन्न बांटने का व्रत लिया था।

गंगोत्री- यहां विश्वनाथ, केदारनाथ, भैरव और अन्नपूर्णा चार मंदिरों सहित पांच-छह धर्मशालाओं का निर्माण करवाया।

बिठूर (कानपुर के समीप)- ब्रह्मघाट सहित गंगा नदी पर कई घाटों का निर्माण करवाया।

ओंकारेश्वर- एक बावड़ी बनवाई और महादेव के मंदिर में नित्य पूजन के लिए लिंगार्चन की व्यवस्था की।

हंडिया - हर्दा के समीप नर्मदा के तट पर स्थित इस स्थान पर एक धर्मशाला और भोजनालय का निर्माण करवाया।

अयोध्या, उज्जैन और नासिक - भगवान राम के मंदिर का निर्माण किया। उज्जैन में उन्होंने चिंतामणि गणपति के मंदिर का भी निर्माण करवाया। सुलपेश्वर में उन्होंने महादेव के एक विशाल मंदिर और भोजनालय का निर्माण करवाया। तथा उन्होंने एक नई परंपरा शुरू की, कि जो भी व्यक्ति इस स्थान पर आएगा उसे एक लोटा, कंबल मिलेगा और यह परंपरा उस समय से आज भी निभाई जाती है।

एलोरा, महाराष्ट्र - 1780 के आस-पास धृष्णेश्वर मंदिर का पुनर्निर्माण करवाया।

महेश्वर - अहिल्याबाई को महेश्वर बहुत प्रिय था। उन्होंने यहां कई प्राचीन मंदिरों, घाटों आदि का जीर्णोद्धार कराया। इसके अलावा, कई नये मंदिर, घाट व मकान बनवाए। उन्होंने महेश्वर में अक्षय तृतीया के शुभ दिन घाट पर भगवान परशुराम का मंदिर बनवाया।

संगमनेर - श्रीराम मंदिर बनवाया।

सिंहपुर - शिवमंदिर व धर्मशाला बनवाई।

नेमावर - श्री सिद्धनाथ का सुंदर मंदिर व धर्मशाला सहित नर्मदा पर एक बड़ा घाट बनवाया।

जगन्नाथपुरी मंदिर को दान और आंध्र प्रदेश के श्रीशैलम सहित महाराष्ट्र में परली वैजनाथ ज्योतिर्लिंग का भी कायाकल्प करवाया। अहिल्याबाई ने हंडिया, पैठण और कई अन्य तीर्थस्थलों पर सरायों (रुकने के स्थानों) का निर्माण करवाया। मध्य प्रदेश के धार स्थित चिकल्दा में नर्मदा परिक्रमा में आने वाले भक्तों के लिए भोजनालय की स्थापना की। मध्य प्रदेश के खरगोन स्थित मंडलेश्वर में उन्होंने मंदिर और विश्राम गृह बनवाए। मांडू में उन्होंने नीलकंठ महादेव मंदिर की स्थापना की।

अहमदनगर - उन्होंने अपनी जन्मभूमि पर भी एक शिवालय और घाट बनवाया था। यह मंदिर अहिल्येश्वर के नाम से जाना जाता है।

कुरुक्षेत्र - रानी अहिल्याबाई को सोने और चांदी से कई बार तौलकर सारा सोना-चांदी ब्राह्मणों को दान कर दिया।

ग्रीष्म ऋतु में कई स्थानों पर प्याऊ का प्रबंध होता था व ठंड में गरीबों को कंबल बांटे जाते थे। इन सारे कार्यों के लिए कई कर्मचारी नियुक्त थे। उनकी सैन्य प्रतिभा के अनेक प्रमाण अभिलेखों में उपलब्ध हैं। उनकी सफल कूटनीति का साक्ष्य यह है कि विशाल सैन्य बल से सज्जित आक्रमण की नीयत से आए राघोबा को उन्होंने अकेले पालकी में बैठकर उनसे मिलने आने के लिए उसे विवश कर दिया। डाकुओं और भीलों को उन्होंने समाज की मुख्यधारा में लाने का यत्न किया तथा समाज के उपेक्षित लोगों की सेवा को उन्होंने ईश्वर की सेवा माना। उनकी व्यावसायिक दूरदृष्टि का उदाहरण महेश्वर का वह वस्त्रोद्योग है जहां आज भी सैकड़ों बुनकरों को आजीविका मिलती है तथा यहां की साड़ियां विश्वप्रसिद्ध हैं। वे अद्भुत दृष्टिसम्पन्न विदुषी थीं।

जाग्रत मालवा अब सोशल मीडिया पर भी

जाग्रत मालवा से वेबसाइट फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम व यूट्यूब पर जुड़कर देशभर के विशेषकर मालवा के समाचार प्राप्त कर सकते हैं।

अभी फॉलो करें - किसी भी प्लेटफॉर्म पर जाकर जाग्रत मालवा सर्च करें

महिला सशक्तिकरण के नए युग का आगाज़ 2024

पूर्णिमा तिवारी

2024 का वर्ष वैश्विक स्तर पर लैंगिक समानता की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हो रहा है, विशेष रूप से राजनीतिक प्रतिनिधित्व के क्षेत्र में। संसद में महिलाओं ने उल्लेखनीय प्रगति की है। लंबे समय से चली आ रही बाधाओं को तोड़ते हुए और विश्वभर में विधायी निकायों में महिला भागीदारी के नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। यह प्रगति न केवल महिलाओं की दृढ़ता और संकल्प का प्रमाण है, बल्कि अधिक समावेशी और प्रतिनिधि शासन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम भी है। यह लेख 2024 में संसद में महिलाओं की वर्तमान स्थिति, उनकी उपस्थिति का महत्व और महिला सशक्तिकरण के व्यापक प्रभावों की जांच करता है।

वर्तमान परिदृश्य - 2024 तक, विश्वभर में संसद में महिलाओं की भागीदारी लगभग 26 प्रतिशत है। यह आंकड़ा, यद्यपि वास्तविक लैंगिक समानता को प्रतिबिंबित नहीं करता, फिर भी यह पिछले दशकों की तुलना में एक महत्वपूर्ण सुधार है। यह प्रगति विभिन्न देशों में महिलाओं के अधिकारों और प्रतिनिधित्व के लिए किए गए निरंतर प्रयासों का परिणाम है।

महिला सशक्तिकरण के प्रतीक - महिलाओं की संसद में बढ़ती भागीदारी न केवल एक संख्या का खेल है, बल्कि यह महिला सशक्तिकरण का प्रतीक भी है। यह दर्शाता है कि महिलाएं अब महत्वपूर्ण निर्णय लेने वाले पदों पर आसीन हो रही हैं, जो सामाजिक और आर्थिक नीतियों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। महिलाओं का यह सशक्तिकरण कई रूपों में प्रकट होता है-

नीति निर्माण में योगदान - महिलाएं अब स्वास्थ्य, शिक्षा और रोजगार जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में नीति निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। उनके दृष्टिकोण और अनुभवों से नीतियों में अधिक समावेशिता और संतुलन आता है।

महिलाओं के मुद्दों पर ध्यान - महिलाओं की बढ़ती उपस्थिति से महिला-संबंधी मुद्दों पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है, जैसे कि मातृत्व लाभ, बाल देखभाल सुविधाएं और लैंगिक हिंसा के खिलाफ कड़े कानून।

रोल मॉडल - संसद में महिलाओं की सफलता अगली पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत है। यह युवा महिलाओं को राजनीति और अन्य क्षेत्रों में करियर बनाने के लिए प्रेरित करता है।

वैश्विक परिदृश्य - विभिन्न देशों ने संसद में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए विभिन्न उपाय किए हैं। उदाहरण के लिए, कुछ देशों ने आरक्षण नीति लागू की है, जबकि अन्य ने महिला उम्मीदवारों को प्रोत्साहित करने के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किए हैं।

नॉर्डिक देश - नॉर्डिक देशों में महिलाओं की भागीदारी सबसे अधिक है, जहां कुछ देशों में यह आंकड़ा 40 प्रतिशत से अधिक है। यह वहां की प्रगतिशील नीतियों और समाज में महिलाओं की समानता की मजबूत संस्कृति का परिणाम है।

रवांडा- रवांडा में भी महिला सांसदों का प्रतिशत अत्यधिक है, जहां यह आंकड़ा 60 प्रतिशत से अधिक है। यह दर्शाता है कि विकासशील देश भी इस क्षेत्र में अग्रणी हो सकते हैं।

भारत - भारत में भी महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि हो रही है, हालांकि यहां अभी भी काफी सुधार की गुंजाइश है। 2024 के चुनावों में कई महिला उम्मीदवारों ने सफलता हासिल की, जो एक सकारात्मक संकेत है।

चुनौतियाँ और आगे की राह - यद्यपि प्रगति हो रही है, लेकिन अभी भी कई चुनौतियाँ बाकी हैं। सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाएं, पारंपरिक मानसिकता और आर्थिक असमानताएं महिलाओं के राजनीति में प्रवेश में बाधा उत्पन्न करती हैं। इन चुनौतियों को दूर करने के लिए व्यापक और समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता है।

शिक्षा और प्रशिक्षण - महिलाओं को राजनीति में सफल होने के लिए आवश्यक शिक्षा और प्रशिक्षण प्रदान करना महत्वपूर्ण है। इससे वे बेहतर तरीके से अपनी भूमिका निभा सकेंगी और चुनौतियों का सामना कर सकेंगी।

सामाजिक समर्थन - परिवार और समाज का समर्थन महिलाओं के राजनीति में प्रवेश और उनकी सफलता के लिए आवश्यक है। इसके लिए जागरूकता अभियान और सकारात्मक सामाजिक बदलाव आवश्यक हैं।

आर्थिक सशक्तिकरण आर्थिक स्वतंत्रता महिलाओं के सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण पहलू है। इसके लिए महिलाओं के लिए स्वरोजगार और उद्यमिता के अवसरों को बढ़ावा देना आवश्यक है।

वीर कोठारी बंधु

आचार्य विष्णुकांत शास्त्री (पूर्व राज्यपाल)

23 वर्ष के राम कुमार कोठारी और 20 वर्ष के शरद कोठारी को अयोध्या में 2 नवंबर, 1990 को गोली मार दी गई थी। उनकी वीरता की कहानी आज भी सुनाई जाती है

बढ़ जाता है मान वीर का
रण में बलि होने से।
मूल्यवती होती सोने की
भस्म यथा सोने से।

सुभद्रा कुमारी चौहान की इन मार्मिक पंक्तियों का अर्थ सचमुच उपलब्ध कर पाया 5 नवंबर, 1990 को, जब कलकत्ते के विख्यात समाजसेवी सर्वश्री अभिमन्यु भवालका, पी.डी. चितलांगिया, जुगल किशोर जैथलिया आदि के साथ मैं अमर शहीद कोठारी बंधुओं के माता-पिता से मिलने गया। मुलायम सिंह यादव के दानवी अत्याचारों का **'शांतिपूर्ण प्रतिवाद'** करते हुए अयोध्या की पावन भूमि में श्रीराम जन्म स्थान पर रामलला के मंदिर का पुनर्निमाण करने के आंदोलन के अपराध के कारण 2 नवंबर, 1990 को शहीद हुए 23 वर्ष के राम कुमार कोठारी और 20 वर्ष के शरद कोठारी कल तक हमारे स्नेह भाजन थे, आज वे श्रद्धाभाजन हो गए थे। बाली की टेढ़ी-मेढ़ी गलियों को पर कर जब हम लोग कोठारी-परिवार के घर पहुंचे तो देखा शोकार्त्त कार्यकर्ताओं का एक बड़ा दल उस मकान के बाहर खड़ा है। कोठारी परिवार का छोटा सा फ्लेट शोक -संवेदना समादर व्यक्त करने वाले स्त्री-पुरूषों से भरा हुआ था। जिस कमरे में कोठारी बंधुओं के पिता-पितामह बैठे थे, उसमें तिल रखने की जगह नही थी।

हम लोगों को देखकर कुछ कार्यकर्ता बाहर आ गए। हमलोग जाकर उनके सामने बैठ तो गए किंतु कोई कुछ बोल नहीं पाया काफी देर तक! अज्ञेय जी ने ठीक ही लिखा है, **"शब्द यह सही है कि सब व्यर्थ है, पर इसलिए कि शब्दातीत कुछ अर्थ है।"**

सबसे पहले कोठारी बंधुओं के पिता श्री हीरालाल कोठारी ही बोले, **"वे दोनों मेरी आज्ञा लेकर ही गए थे और कहकर गए थे कि चाहे जो हो पीठ दिखाकर नहीं लौटेंगे।"** वृद्ध दादा आंखे पोंछ रहे थे किंतु 50 के करीब के पिता अविचलित थे। पत्रकारों ने जब उनसे युवा पुत्रों के बलिदान पर उनकी प्रतिक्रिया जाननी चाही तो उन्होंने कहा, **"श्रीराम जन्मस्थान पर मंदिर अवश्य बनना चाहिए।"** यह पूरा परिवार संघ-परिवार है। शरद राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की एक शाखा का मुख्य शिक्षक था ओर रामकुमार एक मंडल का कार्यवाह । पिता, माता और बहन भी उसकी विविध संस्थाओं की गतिविधियों में भाग लेते रहे हैं। मकान के दरवाजे पर और

प्रायः सभी कमरों के द्वारों पर डॉ. हेडगेवार की तस्वीर और **"गर्व से कहो, हम हिंदू है"** के स्टिकर लगे हुए थे। अर्जुन को उपदेश देते हुए महाभारत के सूत्रधार श्रीकृष्ण का बड़ा चित्र गलियारे को अलंकृ त किए हुए था। इसी वातावरण में पलने-बढ़ने के कारण कोठारी बंधुओं में निर्भीक आत्मोत्सर्ग करने की क्षमता विकसित हुई थी। पत्रकारों के प्रश्न के उत्तर में बहन ने अकंपित स्वर में कहा था, **"मेरे सिर्फ दो भाई थे। यदि दो भाई और होते और वे श्रीराम मंदिर के लिए न्योछावर हो जाते तो मैं अपने को और धन्य मानती।"** बहन की इस निष्ठा के आगे सबके सिर अपने आप झुक गए। मां जरूर रो रही थी, किन्तु उनके पवित्र आंसुओं में किसी परिवारकी नहीं, पूरे देश की व्यथा भी हुई थी। '' **(पांच्चजन्य, 18 नवंबर 1990)**

आर्थिक लाभ : ग्रामीण वृक्षारोपण

श्री प्रजोत गावशिन्दे

मानसून आने वाला है, भीषण गर्मी से थोड़ी राहत मिलने वाली है। इस बार रिकॉर्ड तोड़ गर्मी की मार हम सबने झेली है। कहते हैं आने वाले समय में गर्मी के और भी रिकॉर्ड टूट सकते हैं। 45 से 50 डिग्री सेल्सियस तापमान से मनुष्य ही नहीं आसपास के जीव जंतु भी कष्ट पा रहे हैं। बड़े शहरों जैसे दिल्ली-बेंगलुरु में पानी की कमी की खबरें हम सुन ही रहे हैं। सीमेंट-कॉन्क्रीट के जंगलों का धड़ल्ले से निर्माण कार्य चल रहा है। करोड़ों के 2बीएचके-3बीएचके बंगले -विला लोग बड़ी शान से खरीदे भी जा रहे हैं। मगर छोटे मोहल्लें में टैंकरों से पानी की सप्लाई और मारामारी की खबर और बंगलुरु की एक पॉश सोसाइटी के लोगों का पानी की कमी के कारण पास के आलीशान मॉल में टॉयलेट जाने की खबर सामाजिक समानता की एक मिसाल लगती है, क्यों, है कि नहीं? प्रकृति सबके साथ सामान व्यवहार करती है, उसे न्याय यात्रा नहीं निकालनी पड़ती।

खैर ! इस मौसम में तो सब वृक्षारोपण की बातें करते ही हैं, दो महीने खूब अभियान चलेगा। एक-दो पौधे हम भी लगा देंगे और सोशल मीडिया पे फोटू भी चिपका देंगे। वृक्षारोपण के क्या-क्या लाभ हैं ये सब का तो हम सब को ज्ञान है ही, है कि नहीं? ठीक है, तो फिर बताएं वृक्ष लगाने के लिए सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता क्या है? जी, भूमि है। बिलकुल सही। और ये किसके पास सबसे अधिक है। जी, गाँव के किसान के पास है और क्या, शहरों के स्क्वायर फुट वालों के पास ये विशेष अधिकार कहाँ?

तो भाईसाहब आप लोग क्यों नहीं लगाते पेड़ पौधे? अरे भाई, आप बोलोगे कि हमारी फसल को छाया आती है और नुकसान होता है। तो चलिए वास्तव में नुकसान होता भी है या नहीं देखते हैं। ये नीचे एक टेबल देखते हैं, फिर समझते हैं। **आम की खेती की अनुमानित उपज प्रति वर्ष के अनुसार इस प्रकार है -**

वर्ष	अनुमानित औसत उपज प्रति पेड़ -किलोग्राम	औसत बाजार भाव प्रति किलोग्राम (अनुमानित)	कमाई-1 पेड़ की छाँव के बराबर जमीन (75 स्क्वे.फिट)
1	0	रू. 30-50 प्रति किलो	रू. 0
3	0-5 कि.ग्रा	रू. 30-50 प्रति किलो	रू. 0-250
5	20-25 कि.ग्रा	रू. 30-50 प्रति किलो	रू. 600-2500
7	100-150 कि.ग्रा	रू. 30-50 प्रति किलो	रू. 3000-7500
10	200-300 कि.ग्रा	रू. 30-50 प्रति किलो	रू. 6000-15000

अब हम मध्य प्रदेश के निमाड़-मालवा क्षेत्र की फसलों के हिसाब से कुछ आंकड़े समझते हैं - औसत हाइब्रिड आम के पेड़ की ऊँचाई = 12फीट

पेड़ द्वारा घेरी गयी भूमि (लगभग) = 75 स्क्वायर फीट (2×3.14×12)

फसल	उपज प्रति स्क्वायर फुट (अनुमानित)	औसत बाजार भाव प्रति किलोग्राम (अनुमानित)	5 वर्ष की कमाई-1 पेड़ की छाँव के बराबर जमीन (75 स्क्वायर फुट)	10 वर्ष की कमाई-1 पेड़ की छाँव के बराबर जमीन (75 स्क्वायर फुट)
गेहूं	0.02-03 किलो	रू. 20-25	रू. 150-280	रू. 300-560
कपास	0.01-02 किलो	रू. 50-60	रू. 190-450	रू. 380-900
सोयाबीन	0.05-09 किलो	रू. 30-45	रू. 660-1520	रू. 1320-3040
आम	1 पेड़	रू. 30-50 प्र.कि.	रू. 900-3750	रू. 21900-53750

अब अगर हम रबी और खरीफ की फसलों को दोनों को मिला लें, तो क्रमश 5 वर्ष और 10 वर्ष के आंकड़े इस प्रकार आते हैं, पूर्वोक्त अनुमानित भाव के अनुसार

1 पेड़ की छाँव के बराबर जमीन (75 स्क्वायर फुट)	1 पेड़ की छाँव के बराबर जमीन (75 स्क्वायर फुट)	1 पेड़ की छाँव के बराबर जमीन (75 स्क्वायर फुट)
गेंहू+कपास	रू. 340-730	रू. 689-1460
गेंहू+सोयाबीन	रू. 810-1800	रू. 1620-3600
1 आम का पेड़	रू. 900-3750	रू. 21900-53750

इस प्रकार यह केवल एक पेड़ लगाने के आर्थिक लाभ हम देख रहे हैं। और जब तक पेड़ बड़ा होता है उसके आस-पास भी कुछ दूरी छोड़ के फसल ली जा सकती है। अतः यह मिथक ही है कि पेड़ लगाने से फसल की उपज कम होती है। वरन उपरोक्त आम के भाव बाजार भाव से कम ही आंके गए हैं। ऑर्गेनिक आम तो रू.100 प्रति किलो भी बेचे जाते हैं। और इस प्रकार आम के आम और गुठलियों के भी दाम चरितार्थ होता है। ऐसे अनेक प्रकार के वृक्षों को समझकर हमारे खेतों में लगाया जा सकता है। खाली पढ़त की भूमि पर तो अनेक प्रकार के पौधे लगाए जा सकते हैं। शेष वातावरण, पशु-पक्षी और अन्य प्राणी को भी हम लाभ पहुँचा कर हमारी धरती को हरीतिमा से ढँक सकते हैं।

ईर्ष्या

डॉ. योगेंद्रनाथ शुक्ल

मोहन बाबू और शर्मा साहब लगभग एक साथ सेवानिवृत हुए थे। आज मोहन बाबू शर्मा साहब से मिलने आए थे।

''मोहन बाबू! घर में सब ठीक चल रहा है....! आपके बेटे-बहु आपका ध्यान रखते हैं या नहीं....?'' बिस्कुट की प्लेट उनके सामने खिसकाते हुए शर्मा साहब बोले।

''आपसे क्या छिपाना... सभी कुछ अपना होते हुए भी घर में अछूतों की तरह रह रहे हैं !'' मोहन बाबू ने दुखी स्वर में जवाब दिया।

''ये तो मेरी कहानी है, आपका जीवन कैसा गुजर रहा है?'' अपने चेहरे को सामान्य बनाते हुए उन्होंने शर्मा जी से पूछा।

''आप तो जानते हैं, दोनों पुत्र मेरी सेवानिवृत्ति के पहले ही घर से अलग हो गए थे। अब हमारी स्थिति कोने में रखे उस शब्दकोश ही तरह है... जब जरूरत होती है, उसे खोला जाता है अन्यथा कोने में पड़ा रहता है।'' शर्मा साहब अलमारी की ओर इशारा करते हुए बोले। उनकी बात सुनकर मोहन बाबू का मन भारी हो उठा।... उन्हें **'अछूत' से 'शब्दकोश'** की स्थिति काफी बेहतर लग रही थी।

भरत

श्री पद्मनाभ तिवारी

माँ कौशल्या गुरु वशिष्ठ को शीश नवाकर।
रघुनायक के चरणपीठ से आज्ञा पाकर।।

नन्दिग्राम की पर्णकुटी में भरत बस रहे।
आँखों से जलधार हृदय से राम रट रहे।।

मुनिपट-धारी जटाजूट सिर पर धारण कर।
रहते कठिन धर्म व्रत और नियम पालन कर।।

मुनियों जैसा भोजन जीवन और आचरण।
कैसे होंगे राम, निरंतर यही स्मरण।।

भूमि खोदकर कुश की शय्या वहाँ बिछाई।
उस पर करते शयन, भरत-सा कौन है भाई।।

भोगों और सुखों को मन-से तन-से त्यागा।
केवल राम चरण में उनका मन अनुरागा।।

सीता राम लक्ष्मण अब वन में बसते हैं।
भरत तपस्या से घर में तन को कसते हैं।।

प्रतिदिन राम-पादुकाओं का पूजन करके।
राजकार्य संपादन करते सेवक बनके।।

नालंदा विश्वविद्यालय: एक परंपरा की खोज

डॉ. लखन रघुवंशी

विश्वविद्यालय किसी भी राष्ट्र की रीढ़ के समान होते हैं। वे राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह दुर्भाग्यपूर्ण ही रहा कि भारत जैसे समृद्ध राष्ट्र में भी शिक्षा के लिए हम पश्चिमी राष्ट्रों पर ही निर्भर रहे और अपने ही इतिहास की अवहेलना करते रहे। नालंदा एवं तक्षशिला ऐसे ही दो महान विश्वविद्यालय हैं जो बताते हैं कि भारत अन्य क्षेत्रों की ही तरह शिक्षा के क्षेत्र में भी अग्रणी था। गुप्त वंश के शासक शक्रादित्य ने ईसा से 1200 साल पहले इस विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। इसके वृहद स्वरूप का निर्माण गुप्त काल के ही बाद के शासकों बालादित्य एवं तथागतगुप्त ने कराया। धीरे-धीरे इसकी ख्याति संपूर्ण विश्व में होने लगी।

हिंदू, बौद्ध, जैन धर्मों से प्रभावित इस संस्थान में चीन, नेपाल, जापान और कोरिया से भी लोग अध्ययन के लिए आते थे। इस विश्वविद्यालय की उपस्थिति के साक्ष्य सर्वप्रथम चीनी यात्री ह्वेनसांग के यात्रा वृत्तांतों में मिलते हैं। जिनमें उन्होंने बताया है कि यह एक विशाल शैक्षणिक परिसर था जिसमें विशालकाय कक्षाओं के साथ ही छात्रों के रुकने की भी संपूर्ण व्यवस्था थी। इसमें धर्म के साथ ही राजनीति, अर्थशास्त्र और विज्ञान, चिकित्सा, गणित संबंधित विषयों पर भी शोध होता था। शिक्षा के इस महान प्रांगण ने आर्यभट्ट, हर्ष और धर्मपाल जैसे विद्वान भारत को दिए। नालंदा विश्वविद्यालय की खोज भारत की उस महान परंपरा को दिखाती है जिसने संपूर्ण विश्व में पहली बार शिक्षा के इस प्रांगण की न केवल कल्पना की अपितु इसको साकार भी किया। यहीं से आधुनिक विश्वविद्यालयों की स्थापना का मार्ग खुला।

यह दुर्भाग्य ही है कि नालंदा जैसे महान विश्वविद्यालय पर कई आक्रमण हुए और ज्ञान के इस मंदिर को मिटाने के प्रयास किये गए। कहा जाता है कि इस नालंदा महाविहार का पुस्तकालय इतना समृद्ध और विशाल था कि उसकी पुस्तकें छः माह तक जलती रहीं। नालंदा का सर्वनाश बख्तियार खिलजी ने किया और उसके बाद भारतीय ज्ञान परंपरा भी धीरे-धीरे लुप्त होती गई। अंग्रेजों ने भारत में अपनी शिक्षा पद्धति को ही लागू किया जिसमें भारतीय संस्कृति और शिक्षा पद्धति की पूरी अवहेलना की गई। 19 जून 2024 इतिहास में एक नया अध्याय है जब प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने इस महान इतिहास को पुनः जीवंत कर दिया। इसी दिन फिर से नालंदा के भव्य एवं विशाल परिसर का उद्घाटन किया गया। लगभग 400 एकड़ में बने इस अत्याधुनिक परिसर में विशाल ऑडिटोरियम और विभिन्न विभागों की स्थापना की गई है। इसके साथ ही पर्यावरण और स्वच्छता को केंद्र में रखते हुए इसे भारत का पहला जीरो प्लास्टिक कैंपस बनाने का प्रयास किया गया है। इस परिसर में बायोगैस, वर्षाजल संरक्षण और सोलर उर्जा जैसे महत्वपूर्ण सुविधाएं दी गई हैं जिससे हर आवश्यकता के लिए परिसर आत्मनिर्भर हो।

नया नालंदा विश्वविद्यालय भारत के उसी प्राचीन गौरवशाली इतिहास की पुनर्व्याख्या है इसलिए यह दूसरे विश्वविद्यालयों से भिन्न अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय है। जहां विश्व के इतिहास, वर्तमान और भविष्य पर शोध एवं अकादमिक चर्चाओं का आयोजन किया जाएगा। हाल ही में कई अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वानों ने विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया है। वर्तमान में विश्वविद्यालय में इतिहास, पर्यावरण, दर्शनशास्त्र, साहित्य, मानविकी, प्रबंधन जैसे विषयों पर पाठ्यक्रमों का संचालन एवं अनुसंधान किया जा रहा है और भविष्य में और भी नए विषयों को इस विश्वविद्यालय में संचालित किया जाएगा।

नालंदा महाविहार विश्व में प्रतीक है हमारे गौरवशाली इतिहास का। यह बताता है कि शिक्षा के क्षेत्र में भी भारत दूसरे देशों से आगे था और आज का परिसर यह बताता है कि आगे भी हमारी शिक्षा पद्धति वैश्विक शिक्षा प्रणाली को नए आयाम देगी। भारतीय होने के नाते हम सभी को इस बात पर गौरवान्वित होना चाहिए कि हम सभी इस महान संस्कृति का हिस्सा हैं।

भोजशाला में पुरातत्व विभाग द्वारा किए जा रहे सर्वेक्षण में मिले सैकड़ों हिंदू प्रमाण

पीयूष शर्मा

11 मार्च को मध्य प्रदेश के धार जिले में स्थित भोजशाला के संबंध में दायर एक याचिका पर सुनवाई करते हुए, मध्य प्रदेश हाईकोर्ट ने पुरातत्व विभाग को छः सप्ताह में भोजशाला का वैज्ञानिक सर्वेक्षण करने का निर्देश दिया था। भारतीय पुरातत्व विभाग (एएसआई) द्वारा दिनांक 22 मार्च को सर्वे प्रारंभ कर दिया गया था। विरोधी मुस्लिम पक्ष द्वारा इस सर्वे को रोकने के लिए कई प्रकार की आपत्तियां दर्ज कराई गई थी। उधर ए एस आई ने भोजशाला में उत्खनन के लिए अतिरिक्त समय की मांग की, जिसके जवाब में, माननीय न्यायालय ने विरोधी पक्ष की सारी आपत्तियों को खारिज करते हुए सर्वेक्षण के लिए, आठ और सप्ताह का अतिरिक्त समय प्रदान किया। पुरातत्व विभाग के पास अब 5 जुलाई तक उत्खनन करने का की अनुमति है।

निरंतर उत्खनन के दौरान भोजशाला से कई प्राचीन अवशेषों की प्राप्ति हुई है। प्रारंभिक सर्वे के बाद एएसआई ने जीपीआर तकनीक और जीपीएस मशीनों से सर्वे करने का निर्णय किया। जीपीआर तकनीक द्वारा, जमीन के अंदर लगभग 50 फीट गहराई तक अवशेषों की उपस्थिति का अनुमान लगाया जा सकता है। इन तकनीकों की सहायता से पुरातत्व विभाग को उल्लेखनीय मात्रा में और भी बहुत सी सामग्री मिल चुकी है।

सर्वेक्षण में हिंदू पक्ष को बड़ी उपलब्धि प्राप्त हुई है। सर्वेक्षण का अस्सीवां दिन सबसे महत्वपूर्ण रहा। भोजशाला में सीढ़ियों के नीचे बंद आठ गुणा दस फीट के कमरे में भगवान गणेश, मां वाग्देवी, मां पार्वती, महिषासुरमर्दिनी, हनुमानजी एवं अन्य देवी प्रतिमाएं तथा सनातनी आकृति वाले शंख, चक्र, शिखर समेत करीब 79 अवशेष मिले। इन अवशेषों के प्राप्त होने से हिंदू पक्ष का दावा अत्यंत मजबूत हो गया है। 20 जून 2024 यानी सर्वे के 91वें दिन सर्वे के अपेक्षित किन्तु चौंकाने वाले परिणाम सामने आए। भोजशाला के उत्तरी भाग मे खुदाई दौरान काले पत्थर पर भगवान कृष्ण के खड़े स्वरूप की डेढ़ फीट ऊंची मूर्ति मिली, साथ ही दो अन्य पुरावशेष और भी मिले जिसमें सनातन धर्म को चिह्नित करने वाले प्रतीक चिह्न हैं जबकि दूसरे पुरावशेष में दाई और बाई तरफ यक्ष बने हुए हैं।

सर्वे के दौरान उपस्थित प्रत्यक्षदर्शी याचिकाकर्ताओं

के अनुसार, भोजशाला की दीवारों को केमिकल ट्रीटमेंट से साफ करने के बाद कई आकृतियां स्पष्ट हो गई। गर्भगृह के सामने वाले स्तंभों पर भगवान श्रीराम, श्रीकृष्ण, भगवान शंकर और परशुरामजी की आकृतियां साफ-साफ देखी जा सकती हैं। एक अन्य स्थान पर पत्थर में उकेरे हुए, पर्वत ले जाते हुए हनुमानजी की आकृति भी साफ दिखाई दे रही है। खुदाई में मंदिर के शिखर की आधारनुमा आकृति प्राप्त हुई है। तीन बड़े पत्थर मिले हैं जिन पर अलग-अलग आकृतियां बनाई गई हैं। खुदाई में कई शिलालेख, मूर्तियां, पाषाण के टुकड़े, स्तंभ के टुकड़े, सिक्के, तीर, भाले, तलवार और खंडित मूर्तियां भी प्राप्त हुई हैं। एक विशेष शिलालेख मिला है, जिस पर सूर्यदेव की आठ स्वरूपों की आकृतियां उत्कीर्णित दिखाई दे रही हैं। संगमरमर के पत्थर की भी एक मूर्ति प्राप्त हुई है। एक पत्थर मिला है, जिस पर चित्रकारी दिखाई पड़ रही है। विशेषज्ञों द्वारा की गई सफाई में एक गोमुख की आकृति भी स्पष्ट हो चुकी है। इन प्राप्तियों से अब इस बात में कोई संशय शेष नहीं है कि भोजशाला मूल रूप से हिंदू आस्था का स्थान ही रहा है।

सूत्रों के अनुसार लगभग डेढ़ हजार से अधिक अवशेषों को संग्रहित कर लिया गया है। इनमें 400 से ज्यादा अवशेषों पर स्पष्ट रूप से हिंदू चिन्ह दिखाई देते हैं। पुरातत्व विभाग के विशेषज्ञों ने, भोजशाला के विभिन्न स्थानों से कार्बन डेटिंग प्रक्रिया हेतु भी सैंपल इकट्ठे कर लिए हैं, जिसके आधार पर वे भोजशाला के वर्तमान भवन की प्राचीनता का अनुमान लगाएंगे।

इन सभी प्राप्तियों की रिपोर्ट पुरातत्व विभाग द्वारा, माननीय न्यायालय को ही दी जावेगी।

तपती गर्मी में शीतल अनुभव हैं, पर्यावरण के लिए किए गए यह प्रयास

एक तरफ जब तापमान अपने उच्चतम स्तर को छू रहा था तो वहीं समाज में ऐसे प्रयास किये जा रहे थे, जिनके द्वारा ग्लोबल वार्मिंग की वैश्विक समस्या से लड़ा जा सके। पर्यावरण की चुनौतियों से लड़ने के लिए पेड़ ही हमारे सबसे बड़े सहायक हो सकते हैं, इस बात को ध्यान में रखकर समाज द्वारा कई स्थानों पर वृक्षारोपण और उनके संरक्षण की व्यवस्था की गई। रतलाम के मलवासा ग्राम में स्थानीय मुक्तिधाम समिति ने तीन वर्ष पहले, तीन बीघा क्षेत्र को हरा-भरा करने का अभियान प्रारंभ किया था। वहां लगभग 400 से अधिक पौधे लगाए गए थे। इस समयांतराल में पौधों का व्यवस्थित संरक्षण भी किया गया। अब उस स्थान की दशा बदल चुकी है। दूर से ही मुक्तिधाम पर हरियाली दिखाई देने लगी है। अब तो जनसामान्य वहां घूमने भी चले आते हैं। मनासा की पर्यावरण मित्र संस्था ने भी बंजर जमीन पर पौधे लगाकर नई वाटिका का निर्माण किया। यह संस्था पिछले 25 वर्षों से सतत पर्यावरण के लिए कार्य कर रही है। ऐसे कई पौधे जो उन्होंने पिछले वर्षों में रोपे थे आज बड़े-बड़े वृक्षों का रूप ले चुके हैं। मंदसौर के नंदकिशोर पाटीदार ने समाज के लिए अनुकरणीय कार्य प्रस्तुत किया है। लगभग 21 वर्ष पूर्व तत्कालीन राष्ट्रपति डॉक्टर कलाम से प्रेरणा लेकर उन्होंने पौधे लगाना प्रारंभ किया था। पौधों को लगाने के बाद उन्होंने उनका सतत संरक्षण भी किया। आज उनमें से कई पौधे बड़े वृक्षों में परिवर्तित हो चुके हैं। इंदौर के एस जी एस आई टी एस कॉलेज में नियम की पद्धति से 1 एकड़ में 8000 से अधिक पौधे लगाए गए थे। इन पौधों की निरंतर देखभाल की गई। अब यह सभी लगभग 5 से 6 फीट ऊंचे हो चुके हैं, जिनसे पूरा क्षेत्र हरा-भरा दिखाई देता है।

इसी महाविद्यालय में जल संकट से बचने के लिए वर्षाजल का संरक्षण करने वाले रिचार्ज शाफ्ट का भी निर्माण किया गया। इस शाफ्ट के द्वारा परिसर में इकट्ठा होने वाला 10 लाख गैलन पानी सीधे जमीन में उतर जाएगा जिससे, आसपास के बोरिंग में भी वर्ष भर पानी बना रहेगा। इनके अलावा खातेगांव, मनावर, धरमपुरी, पड़ियाल, गंधवानी, सुसारी, सरदारपुर, उमरबन इत्यादि स्थानों पर समाजजनों ने प्राचीन कुओं, बावड़ियों व तालाबों की सफाई की और वहां पौधारोपण किया। प्रकृति की सुरक्षा के लिए समाज द्वारा किए गए ऐसे ही सामूहिक प्रयासों से हम एक स्वस्थ और स्वच्छ पर्यावरण का निर्माण कर सकेंगे।

जावरा के जागनाथ महादेव मंदिर में गौवंश का कटा सिर फेंके जाने से हिंदू समाज में गुस्सा

14 जून की प्रातः रतलाम के जावरा स्थित जागनाथ मंदिर के पुजारी अचानक हतप्रभ रह गए, जब उन्होंने भगवान गणेश की प्रतिमा के सामने बछड़े के कटे हुए सर को पड़ा हुआ देखा। दरअसल पिछली रात को ही कोई गौहत्या करने के बाद बछड़े का वह कटा हुआ सर मंदिर में फेंक गया था। जैसे ही इस घटना की जानकारी समाज को मिली, आक्रोशित हिंदू समाज मंदिर प्रांगण में इकट्ठा होने लगा। जावरा में तनाव की स्थिति पैदा हो गई। गुस्साए लोगों ने तत्काल जावरा बंद की घोषणा कर दी। समाज के अधिकतर लोगों ने अपनी दुकानें, विरोध स्वरूप स्वयं ही बंद कर दी थी। घटना के बाद श्रद्धालुओं ने पूरे मंदिर को धोकर शुद्ध किया।

जन सामान्य की भावनाओं और घटना की संवेदनशीलता को देखते हुए, प्रशासन भी चौकन्ना हो चुका था। जल्दी ही सीसीटीवी फुटेज और मोबाइल लोकेशन के आधार पर, मेवातीपुरा के दो मुस्लिम युवकों सलमान और शाकिर को दबोच लिया गया। इन्होंने बताया कि किसी शाहरुख और नौशाद नामक व्यक्ति ने इन्हें बछड़े की गर्दन लाकर मंदिर में फेंकने के लिए दी थी। पुलिस ने तत्परता दिखाते हुए इन दोनों आरोपियों को भी गिरेतार कर लिया। जांच में स्पष्ट हो गया कि इन्हीं दोनों ने बछड़े की हत्या की थी। आरोपियों का पता चलते ही इन चारों के घरों को, प्रशासन ने जेसीबी मशीनों

की सहायता से ढहा दिया। पुलिस, कड़ाई दिखाते हुए इन चारों आरोपियों को पैदल जुलूस के रूप में पेशी पर ले गई। पुलिस के अनुसार नौशाद के खिलाफ 28 केस पहले से ही दर्ज हैं। इन चारों के खिलाफ एनएसए एक्ट में कार्यवाही की जा रही है।

नारद जयंती

मालवा प्रान्त के कई जिलों में पत्रकार मिलन सम्पन्न हुआ।

भोजशाला

ASI सर्वे के 94वें दिन खुदाई में 5 छोटे और 6 बड़े अवशेष निकले हैं। इस पर हिंदू पक्ष ने एक बार फिर इन अवशेषों पर सनातनी आकृतियां होने का दावा किया है।

भारतीय संस्कृति का उदयकाल, प्राचीनतम ज्ञान का केंद्र, नालंदा विश्वविद्यालय ने 815 वर्ष पश्चात अपना वैभव प्राप्त किया।

अगस्त माह के मुख्य व्रत, त्यौहार एवं दिवस

ता. 04 हरियाली अमावस्या
ता. 11 खुदीराम बोस शहीद दिवस
ता. 15 स्वतंत्रता दिवस
ता. 16 पं अटलबिहारी वाजपेई पु.ति.
ता. 19 रक्षाबन्धन, संस्कृति दिवस
ता. 26 श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत

बुक-पोस्ट
जाग्रत मालवा
प्रति,

स्वामी- विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्रांकण ऑफसेट ए-11डी, पोलोग्राउण्ड इन्दौर म.प्र. से मुद्रित एवं अर्चना भवन, 76 रामबाग, इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक अरूण सपकाले फोन नं. 0731-3551341